39

परमेश्वर का प्रबन्ध

(रोमियों 8:28)

परमेश्वर का भय मानने वाली एक बूढ़ी भज़्त को जिसने जीवन में बहुत दुख सहा था, से पूछा गया कि उसने कभी शिकायत नहीं की। उसका उज़्र था, "जब मैं शिकायत करती हूं तो मैं प्रभु से केवल इतना कहती हूं कि वह मुझे आराम कुर्सी पर रखकर[1] खामोश कर दे।" एक व्यज़्ति जिसने प्रश्न पूछा था ईधर उधर देता परन्तु उसे कोई आराम कुर्सी नहीं मिली, सो उसने पूछा कि इसका अर्थ ज़्या है। उज़्र मिला, "मेरी आराम कुर्सी रोमियों 8:28 है 'जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, सब बातें मिलकर उनकी भलाई के लिए ही काम करती हैं' " (KJV)।[2]

एक आवश्यक प्रबन्ध

यह ज़्या है

यह पाठ उपाय पर है। "उपाय" शज़्द बाइबल में आम तौर पर नहीं मिलता (प्रेरितों 24:2 में इसका रूप मिलता है), परन्तु ईश्वरीय उपाय की अवधारणा पूरी पुस्तक में मिलती है।

इसके लिए अंग्रेज़ी शज़्द "providence" दो लातीनी शज़्दों से लिया गया है। पहला तो *pro* है। आज हम "pro" शज़्द का इस्तेमाल "प्रोफैशनल" के लिए छोटे रूप में करते हैं; या हम "pro" "con" कहते हैं जिसमें "pro" का अर्थ "के लिए" है। इनमें से कोई भी परिभाषा "प्रोविडेंस" में *pro* का अर्थ नहीं बताती "pro" की जगह "pre" पर विचार करें जिसका अर्थ *पूर्व* है। दूसरा लातीनी शज़्द *vid* है "video" पर विचार करें जिसका अर्थ *देखा* है। दोनों शज़्दों को मिलाने पर "providence" शज़्द बनता है, जो परमेश्वर के वह *देखने* के लिए है जिसकी हमें आवश्यकता से *पूर्व* आवश्यकता है, और फिर उस आवश्यकता के लिए *देना* या *प्रोवाइड* करना है। "Provide," "provision," and "providence" आपस में जुड़े हुए हैं।

आप पूछ सकते हैं, "परमेश्वर के लिए समय से पहले मेरी आवश्यकताओं को देखना कैसे सज़्भव है?"[3] ज़्लेब्रायंट[4] ने कहा कि परमेश्वर हम से "अलग टाइमज़ोन" में रहता है। ओज़्लाहोमा में लोग CST अर्थात सेंटर्ल स्टैंडर्ड टाइम में रहते हैं परन्तु ज़्ले ने सुझाव दिया कि परमेश्वर "DST" में रहता है यानी "डिवाइन स्टैंडर्ड टाइम" में रहता है। उस "समय क्षेत्र" में, भूत, वर्तमान और भविष्य सब एक होते हैं। ज़्या मैं इसे समझता हूं। नहीं, परन्तु विश्वास से मुझे मालूम है कि परमेश्वर किसी न किसी प्रकार हमारी आवश्यकताओं को पहले से जानकर हमारे लिए उनका प्रबन्ध हमारी आवश्यकता आने से भी पहले करता है।

पवित्र शास्त्र यह गवाही देता है कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए प्रबन्ध विशेष प्रकार से करता है। मैं इस सच्चाई से दो निष्कर्ष निकालता हूं। पहला, परमेश्वर आप हमारे संसार में सक्रिय है। उसने संसार को बनाकर यूं ही छोड़ नहीं दिया। दूसरा, परमेश्वर जीवन के मामलों को ऐसे

आदेश देता है, जिससे उसके बच्चों को आशीष मिले!

मैं इसमें क्यों विश्वास करता हूं

मैं कई कारण बता सकता हूं कि मैं परमेश्वर के प्रबन्ध में क्यों विश्वास करता हूं। उदाहरण के लिए मैं कह सकता हूं कि मैं इसमें इसलिए विश्वास करता हूं क्योंकि यह तर्कसंगत है। परमेश्वर ने इस संसार को मनुष्य के निवास के रूप में बनाया। फिर उसने पुरुष और स्त्री को जो उसकी सृष्टि का सिरताज हैं, बनाया। उसने पशुओं का संसार, वनसपति संसार तथा खनिज संसार को मनुष्य के अधिकार में रखा। इतना सब कुछ सहने के बाद, परमेश्वर अपनी सृष्टि को छोड़कर उसे यूं ही नज़रअंदाज क्यों करेगा? आप ऐसे व्यक्ति के विषय में क्या सोचते हैं जिसने किसी बच्चे को जन्म दिया और फिर छोड़ दिया। बिना यह विचार के कि उसकी आवश्यकताएं कैसे पूरी होंगी। आप उसे एक असफल पिता मानेंगे। परमेश्वर असफल नहीं है। उसने न केवल हमें बनाया है बल्कि वह मारी देखभाल करता और हमारी आवश्यकताओं के लिए प्रबन्ध करता रहता है। इस कारण मैं कह सकता हूं कि मैं परमेश्वर के प्रबन्ध में विश्वास रखता हूं क्योंकि यह बिल्कुल सही है।

परन्तु मैं धन्यवाद करता हूं कि मैं केवल मानवीय तर्क पर निर्भर नहीं हूं। तर्क में त्रुटि हो सकती है। मेरे विश्वास का एक और महत्वपूर्ण कारण यह है कि बाइबल के कई *उदाहरण* यह दिखाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए विशेष प्रबन्ध करता है। ले. डब्ल्यू. मैक्गर्वे[5] की प्रवचनों की एक पुस्तक में पुराने नियम की कहानियों पर आधारित "ईश्वरीय प्रबन्ध" पर दो पाठ हैं। एक तो यूसुफ की कहानी है। बाइबल के विवरण के अन्त के निकट, यूसुफ को उसके साथ होने वाली सब बातों में परमेश्वर का हाथ दिखाई दिया। उसने अपने भाइयों को बताया:

> *परमेश्वर* ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिये भेजा, कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े। इस रीति अब मुझ को यहां पर भेजनेवाले तुम नहीं, परमेश्वर ही ठहरा: और उसी ने मुझे फिरौन का पिता सा, और उसके सारे घर का स्वामी, और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है (उत्पत्ति 45:7, 8)।

दूसरी कहानी एस्तेर रानी की है, जिसमें एस्तेर के एक भाई ने उससे कहा, "क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिए राजपद मिल गया हो?" (ऐस्तेर 4:14)।

मेरे ईश्वरीय प्रबन्ध में विश्वास करने का एक और कारण है, जो सबसे महत्वपूर्ण कारण है: परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई *प्रतिज्ञाओं के कारण।* हम उन कई वचनों में देख सकते हैं जो हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम और लगाव की बात करते हैं।[6] उदाहरण के लिए याकूब 1:17 कहता है: "हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है।" हम इन तीन प्रसिद्ध शब्दों "परमेश्वर ने जगत से ऐसा *प्रेम रखा*" (यूहन्ना 3:16) के अर्थों पर भी विचार कर सकते हैं। परन्तु बहुतों के लिए इस विषय पर सबसे पसंदीदा वचन रोमियों 8:28 है: "और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"

एक रोमांचकारी प्रतिज्ञा

KJV में "सब बातें मिलकर भलाई के लिए मिलकर काम करती हैं" है जबकि NASB में "*परमेश्वर* सब बातों को मिलाकर भलाई करवाता है" है। वचन में "परमेश्वर" शज़्द हो या न, हम में से अधिकतर लोग समझ जाते हैं कि जीवन की घटनाएं अपने आप "भलाई के लिए मिलकर काम" नहीं करती। स्पष्ट तौर पर इसमें *परमेश्वर* का हाथ होता है। आइये जो कुछ परमेश्वर हमारे लिए करता है उसे और अच्छी तरह समझने के लिए इस रोमांचकारी वचन को निकट से देखें।

आत्मविश्वासपूर्ण बात

पहले हम देखते हैं कि रोमियों 8:28 आत्मविश्वासपूर्ण एक बात है। पौलुस ने "और हम *जानते हैं*" शज़्दों के साथ आरज़्भ किया। इस प्रेरित ने कई बार अपना आत्मविश्वास "मैं जानता हूं" (देखें 2 तीमुथियुस 1:12; KJV) या "हम जानते हैं" (देखें 2 कुरिन्थियों 5:1) कहते हुए जताया। रोमियों 8:28 में उसने ऐसा ही आत्मविश्वास दिखाया। बैटसल बैरट बैज़्सटर ने कहा है:

> कुछ लोग इस पद को कहेंगे, "ज़्या यह सच हो सकता है?" अन्य कहेंगे, "काश यह सच होता।" ऐसे भी हैं जो कहेंगे, "उज़्मीद है यह सच है।" परन्तु ध्यान दें कि पौलुस ने आयत का आरज़्भ "हम जानते हैं" के साथ किया। यह केवल आशा या इच्छा या सज़्भावना नहीं है, ज़्योंकि पौलुस कहता है, "हम *जानते हैं*। ..."[7]

व्यापक बात

हम यह भी देखते हैं कि हमारा वचन पाठ एक *व्यापक* बात है: "... हम जानते हैं कि ... परमेश्वर *सब बातों को* मिलाकर हमारी भलाई करवाता है। ... " हम में से अधिकतर लोग समझते हैं कि बाइबल में "सब बातें" का अर्थ हमेशा अस्तित्व में "*हर* बात" नहीं होता (देखें 1 कुरिन्थियों 13:7; 3:21; 2 कुरिन्थियों 5:18)। यह भी समझते हैं कि वचन हमें *पाप* करने के लिए प्रोत्साहित नहीं कर रहा और न ही यह सिखाता है कि *पापी होना* हमारे लिए भला होगा (देखें 1 कुरिन्थियों 15:34; 1 यूहन्ना 2:1; इफिसियों 4:26)।[8] वचन जो बात कहता है वह यह है कि जीवन में हमारे साथ होने वाली हर बात चाहे वह भली हो या बुरी, परमेश्वर द्वारा अन्तत: हमारे भले के लिए *इस्तेमाल* की जा सकती है। संदर्भ ज़ोर देता है कि परमेश्वर हमारे लिए यह इसलिए करता है ज़्योंकि वह हम से प्रेम करता है:

> सो हम इन बातों के विषय में ज़्या कहें, ? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ ज़्योंकर न देगा? ... कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? ज़्या ज़्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नङ्गाई, या जोखिम, या तलवार? ... परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया, है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। ज़्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई

और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी (रोमियों 8:31-39)।

समन्वयकारी बात

फिर मैं सुझाव देता हूं कि हमारा वचन पाठ *समन्वयकारी* वाक्य है यानी यह चीज़ों के "मिलकर काम करने" की बात करता है: "... हम जानते हैं कि परमेश्वर ... सब बातें मिलाकर भलाई ही को उत्पन्न करता है।" सब बातें भली नहीं होती, परन्तु वे "मिलकर भलाई करती हैं।"

एक रविवार दोपहर, मैं और मेरी पत्नी आरकैंसा से ऑक्लाहोमा जा रहे थे। संध्याकाल की आराधना के समय हमने पाया कि हम एनरीटा, ऑक्लाहोमा के पास हैं, सो हम वहां आराधना के लिए रुक गए। रैड कोल्वन नामक जवान जिसे मैं बरसों सो जानता था, एक सुसमाचार सभा में विचार कर रहा था। उस रात उसने रोमियों 8:28 को वचन पाठ के रूप में इस्तेमाल करते हुए इसे दिलचस्प ढंग से समझाया। सभागार में आगे उसके सामने कुछ बच्चों की टोली थी। उसने पहले बच्चे को आटे का एक बर्तन देते हुए उससे आटे का स्वाद पूछा। ऐसा करते हुए उसने अपना मुंह ऐसे बनाया जिससे यह संकेत मिले कि इसका स्वाद अच्छा नहीं है। रैड ने दूसरे बच्चे को मक्खन वाला बर्तन दिया और उसके साथ भी वैसा ही हुआ। फिर उसने नमक, खाने वाला सोडा, अलग -अलग स्वाद, दूध, चीनी तथा खाने वाली अन्य चीज़ों के साथ इसी प्रकार किया। दूध और चीनी को बच्चों की स्वीकृति मिल गई परन्तु उन्होंने अन्य वस्तुओं के साथ की परवाह नहीं की। फिर रैड ने सही बर्तन लेकर उन सब का सामान एक बर्तन में डालकर "बुरी" और "अच्छी" चीज़ों के "मिलकर काम करने" पर बातें करते करते उन सब को मिला दिया। तब तक सब को समझ आ चुका था कि वह केक बना रहा है। उसने पुलपिट के पीछे से केक निकाल लिया जो उसी सामान से बनाकर रखा गया था और यह उसने अपने छोटे सहायकों को बांट दिया। वे सब मान गए कि सब चीज़ों के "मिलकर काम करने" से उन्हें सचमुच "अच्छा" मिला!

चीज़ों के अच्छे अन्त के लिए "मिलकर काम करने" काम करने के कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। मैक्गर्वे ने ऐस्तेर पर अपने प्रवचन के लिए शिकागो के बड़े मेले में देखी एक बड़ी खड्डी (विविंग मशीन) का उदाहरण इस्तेमाल किया। उसमें कोई मानवीय हाथ काम नहीं कर रहा था। शटल उड़ रहे थे, धागे घूम रहे थे, मशीन तेज़-तेज़ चल रही थी और मशीन में से सिल्क के सुन्दर थान बनकर बाहर आ रहे थे। मैं मैक्गर्वे के निष्कर्ष को इस प्रकार देखता हूं: "कोई मुझे यह यकीन नहीं दिला सकता कि बुनने वाले वे हाथ अपने आप बन गए, और न मुझे कोई यह यकीन दिला सकता है कि एस्तेर की कहानी अपने आप बन गई, या हमारे हाथ अपने आप काम करते हैं। परमेश्वर मनुष्यों के जीवनों में राज करता है!"[9]

परमेश्वर इस संसार में और हमारे जीवनों में हमारी भलाई के लिए काम कर रहा है। हमारे सामने परीक्षाएं और कष्ट हो सकते हैं, परन्तु हम आश्वस्त हो सकते हैं कि उसकी सहायता से अन्त में हम विजयी होंगे। हमने आयत 37 पहले ही पढ़ी है जिसमें पौलुस ने कहा कि "हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया, है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।"

तसल्ली देने वाला वाज़्य

हमारा वचन पाठ तसल्ली देने वाला वाज़्य भी है: "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर *भलाई* को ही उत्पन्न करती हैं।" जीवन चाहे जो भी दे, इस सच्चाई से जुड़े रह सकते हैं कि यदि हमारा विश्वास परमेश्वर में बना रहता है, तो अन्त में वह यह सुनिश्चित करेगा कि परिणाम अच्छा ही हुआ।

कइयों को इस पर विश्वास करना कठिन लगता है। वे धर्मी व्यज़्ति को बीमारी, निर्धनता और अकेलेपन जैसी समस्याओं से जूझते देखते हैं, जबकि उसी समय अधर्मी लोग फल फूल रहे होते हैं। उनका कहना है, "जब हमने अपनी आंखों से देखा है तो हम कैसे मान सकते हैं कि ईश्वरीय प्रबन्ध हैं?" इस प्रश्न के कई उज़र हैं, परन्तु मैं "भलाई" शज़्द की अपनी परिभाषा पर केन्द्रित रहना चाहता हूं।

यह सोचकर कि यह संसार हमारा घर है धोखे में पड़ना आसान है। ऐसा होने पर हम सोचने लगते हैं कि सज़्मान, धन, आनन्द, प्रसिद्धि और यहां तक कि अच्छी सेहत जैसी सांसारिक चीज़ें ही सब कुछ हैं। यदि हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं तो हम गलत नाप से नाप रहे हैं।

बहुत साल पहले जब मैंने ग्रेटर ओज़्लाहोमा नगर की गांव की मण्डली के लिए प्रचार करना आरज़्भ किया था, तो अर्ल मैथियुस (हमारा एक सदस्य जो कई बार प्रचार भी करता था) ने पूछा कि ज़्या मुझे पता है कि प्रभु ने लोगों को इस पृथ्वी पर ज़्यों रखा। इस प्रश्न पर मैंने पहले विचार नहीं किया था। अर्ल ने इस विषय पर कई वचन बता दिए और मैंने अपनी बाइबल के आगे उनमें से कई लिख लिए ताकि मुझे वह सबक याद रहे जो उसने बताया था।

> हे प्रज़ु हे मेरे परमेश्वर मैं अपने सज़्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूंगा,
> और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूंगा (भजन संहिता 86:12)।
>
> सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है
> कि परमेश्वर का ज़य मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; ...
> (सभोपदेशक 12:13)।
>
> उसी प्रकार तुज़्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुज़्हारे भले कामों को देखकर तुज़्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें (मज़्ी 5:16)।
>
> कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; ज़्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं (प्रकाशितवाज़्य 4:11)।

जीवन का हमारा उद्देश्य दोहरा है: (1) परमेश्वर की महिमा करना और (2) अनन्तकाल तक परमेश्वर के साथ रहने के लिए तैयारी करना। दोनों ही लक्ष्यों में परमेश्वर जैसे बनने की कोशिश करना शामिल है। ऐसा है तो, *कोई भी बात जो हमें परमेश्वर से दूर ले जाती है "बुरी" है और कोई भी बात जो हमें परमेश्वर के निकट ले जाती है "अच्छी" है।*

इस अन्तरदृष्टि का इस्तेमाल नापने वाली छड़ी के रूप में करना हमारे साथ होने वाली बातों

को एक अलग दृष्टिकोण में डाल देता है। उदाहरण के लिए इस संसार की गालियां हमारे लिए इसकी चापलूसी से अधिकतर हो सकती हैं। भौतिक आशीषें कई लोगों को परमेश्वर के निकट नहीं लाती, बल्कि वह एक रुकावट होती है। यीशु ने चेतावनी दी, "और उस ने उन से कहा, चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो: ज़्योंकि किसी का जीवन उस की संपज़ि की बहुतायत से नहीं होता" (लूका 12:15)। प्रभु ने कहा कि "परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है" (मज़ी 19:24)।

यही नियम जीवन के बहुत से अन्य क्षेत्रों में लागू होता है। हो सकता है कि बीमारी भी स्वास्थ्य से बढ़कर हमारी सेवा करे। मुझे गलत न समझें। मैं यह बिल्कुल नहीं कह रहा हूं कि हमें बुरी सेहत की इच्छा करनी चाहिए या अपने तन की देखभाल नहीं करनी चाहिए; यह तो 1 कुरिन्थियों 3:16, 17 और 6:19, 20 की शिक्षा के विरुद्ध हो जाएगा। बल्कि मैं यह कह रहा हूं कि यदि हमारा व्यवहार सही है, तो परमेश्वर बीमारी से भी हमारे लिए भलाई निकाल सकता है। बीमारी के बिस्तर पर पड़ा पुरुष या स्त्री चीज़ों को आमतौर पर साफ़ रोशनी में देखता है। अपने जीवन में मुझे कई बार काफ़ी समय तक सीधे लेटना पड़ा है और स्पष्ट रूप से इससे मुझे ज़्या महत्वपूर्ण है और ज़्या नहीं के अपने दृष्टिकोण में सहायता मिली है।

भजनकार ने भजन संहिता 119 में बीमारी की एक सज़्भावित आशीष की बात की है: "मुझे जो दु:ज़ हुआ वह मेरे लिए ज़ला ही हुआ है, जिस से मैं तेरी विधियों को सीज़ सकूं।" (आयत 71)। मैंने मरफर्सी बोरो, टैनिसी के एक मसीही भाई के बारे में पढ़ा है, जिसके सामान्य जीवन के कई वर्ष टीबी (तपेदिक) ने खा लिए। अपना समय उसने बाइबल का अध्ययन करने तथा इसके वचनों को याद करने में बिताया। उसने अपने जीवन के उस सबसे आशीषित समय के रूप में याद करते हुए कहा, "मैंने बहुत सी आयतें सीखी हैं जो बीमार न होता तो कभी नहीं सीख पाता।"[10]

बीमारी के और लाभ बताए जा सकते हैं, जैसे आत्मिक परिपज़्वता पाने की सज़्भावना। कहा जाता है (और आमतौर पर सही होता है) कि यदि आपने अधिक कष्ट नहीं सहा है, तो आप शायद प्रभु में उतने बड़े नहीं हैं। इसके अलावा बीमारी हमें दूसरों को समझने और तसल्ली देने के और योग्य बना सकती है जब उन पर वैसी ही कोई बात होती है।

जब हमारे जीवनों में विपज़ि आती है और हमें उस सब में परमेश्वर का हाथ देखने में दिज़्क़त होती है, तो हमें "भलाई" की अपनी परिभाषा को सुधारने की आवश्यकता है। परमेश्वर "सब बातों को" वे अपेक्षित हों या अनापेक्षित, मिलाकर, हमें अपने निकट लाने के लिए हमारी "भलाई" के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

शर्तसहित वाज़्य

मैं इस प्रस्तुति को यह कहे बिना समाप्त नहीं कर सकता कि हमारा वचन पाठ *शर्तसहित* वाज़्य है। रोमियों 8:28 की प्रतिज्ञा सब के लिए नहीं है। यह केवल उनके लिए है "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"

"जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं" शज़्दों को पढ़ते हुए मेरे ध्यान में "बड़ी आज्ञा" के बारे में यीशु का कथन स्मरण आता है: "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण

और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मत्ती 22:36, 37)। मुझे यूहन्ना की बात भी याद आती है: "और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं" (1 यूहन्ना 5:3; देखें 2 यूहन्ना 6)।

"बुलाए" शब्द सुसमाचार की बुलाहट का उत्तर देने के विषय में हैं (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। जब लोग विश्वास के द्वारा इस ईश्वरीय बुलाहट का उत्तर देते हैं (प्रेरितों 2:36-38) और प्रभु उन्हें अपनी देह अर्थात कलीसिया में मिला लेता है (प्रेरितों 2:47; KJV; देखें 1 कुरिन्थियों 12:13)। इस प्रकार वे परमेश्वर के "बुलाए हुए" लोगों (*ekklesia*) का भाग बन जाते हैं।

"*उसकी* इच्छा के अनुसार" शब्दों को नज़रअन्दाज न करें। हमारे मनों और हृदयों में *परमेश्वर* के उद्देश्यों को पूरा करने और *परमेश्वर* की इच्छा को मानना ही सबसे पहले होना आवश्यक है। रोमियों 8:28 में पौलुस ने हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और आशिषों में उड़ने दिया, परन्तु फिर वह हमें कुछ व्यवहारिक बातों के साथ पृथ्वी पर नीचे ले आया। यदि हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और आशिषों को पाना चाहते हैं तो हमें अपने जीवन उसे देकर उससे प्रेम करना आवश्यक है। हमें सुसमाचार की बुलाहट को विश्वास से मानना और उसकी इच्छा के आगे झुकना आवश्यक है।

सारांश

रोमियों 8:28 बाइबल की मेरी पसंदीदा आयत है: "और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" इस आयत के अर्थ हैं, परन्तु केवल उन्हीं के लिए जिन्होंने अपने जीवन प्रभु को सौंप दिए हैं। याद रखें कि रोमियों 8:28 की प्रतिज्ञा हर किसी के लिए नहीं है; यह केवल "उन्हीं के लिए है जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" क्या आपने वह करके जो परमेश्वर ने आपसे करने को कहा है अपना प्रेम दिखा दिया (यूहन्ना 14:15)? क्या आपने अपने पापों से मन फिराकर, यीशु के नाम का अंगीकार करके और बपतिस्मे में डूबकर विश्वास दिखा दिया है (यूहन्ना 3:16; लूका 13:3; मत्ती 10:32; मरकुस 16:16)? यदि आपने ये बातें कर ली हैं, तो फिर क्या आपका जीवन वैसा है जैसा मसीही व्यक्ति का होना चाहिए या आपको पश्चात्ताप और प्रार्थना में उसकी ओर वापस लौटने की आवश्यकता है (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16)? यदि आप प्रभु की इच्छा को मानने को तैयार हैं, तो आप आज ही रोमियों 8:28 की अद्‌भुत प्रतिज्ञाओं पर दावा कर सकते हैं!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ के साथ परमेश्वर के प्रबन्ध पर किसी गीत का इस्तेमाल कर सकते हैं।

रोमियों 8:28 पर टैक्सचुअल सरमन के लिए एक और विचार है: (1) परमेश्वर के पास सामर्थ है जिसका इस्तेमाल वह कर रहा है ("परमेश्वर सब बातों को मिलाकर भलाई उत्पन्न करता है"); (2) परमेश्वर के पास लोग हैं जिनकी वह सहायता कर रहा है ("जो लोग परमेश्वर

से प्रेम रखते हैं, अर्थात जिन्हें बुलाया गया है"); (3) परमेश्वर का एक उद्देश्य है जिसे वह पूरा कर रहा है ("उसकी इच्छा के अनुसार")।

टिप्पणियां

[1]बड़ी, आरामदायक, गद्दीनुमा कुर्सी को "आराम कुर्सी" कहा जाता है। [2]फ्रैंक एल. कोज़्स, "माई ईज़ी चेयर," *टवंट्यिथ सेंचुरी क्रिश्चियन* (मई 1958): 17 से लिया गया। [3]रोमियों 8:29 की चर्चा के सज़्बन्ध में परमेश्वर के पूर्वज्ञान पर चर्चा देखें। [4]ज़्लेब्रायंट ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट इन मिडवेस्ट सिटी, ओज़्लाहोमा के एक प्रचारक हैं। सेवकाई का उनका विशेष क्षेत्र नवयुवकों के साथ काम करना है। [5]जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे, *मैज़्गर्वे'स सरमन्स* (लैज़्सिंगटन, कैंटकी: पृष्ठ नहीं, 1893; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गास्पल लाइट पज़्लिशिंग कं., 1975), 215–46. यदि आपके सुनने वाले ऐस्तेर और यूसुफ़ की कहानियों से परिचित नहीं हैं, तो आप ईश्वरीय प्रबन्ध के इन ज़बर्दस्त उदाहरणों को उन्हें याद दिलाएं। [6]अपने लोगों की परमेश्वर की देखभाल पर और कई वचन है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं: भजन संहिता 3:3–6; 4:8; 5:11, 12; 17:7, 8; 23:1–4; 27:1; 28:7; 34:4, 7, 17, 19; 46:1; यशायाह 40:28–31; 41:10; मज़्ती 10:29–31; 28:20; इब्रानियों 13:5, 6. जो आपके लिए बहुत उपयोगी होंगे उनका इस्तेमाल करें। [7]बैटसेल बैरट बैज़्सटर, "कोविडेंस ऑफ़ गॉड," हिल्स बोरो चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, नैशविल्ले, टैनसी, 18 अज़्टूबर, 1959 को दिए गए सरमन की प्रतिलिपि। [8]बाइबल उदाहरण देती है जिनमें परमेश्वर ने अतीत के पाप का इस्तेमाल पापी द्वारा मन फिराने के बाद भलाई उत्पन्न करने के लिए किया (देखें लूका 22:32)। परन्तु यह चर्चा किसी और समय हो सकती है। [9]मैज़्गर्वे, 245–46 पर आधारित। [10]बैटसल बैरट बैज़्सटर, *ग्रेट प्रीचर्स ऑफ़ टुडे: सरमन्स ऑफ़ बैटसल, बैरट बैज़्सटर* (अबिलेन, टैज़्सस: बिज़्लिकल रिचर्स प्रैस, 1960), 154 से लिया गया।